Dr.Uttam Kumar
SRAP College,Barachakia
Mob no-8210561032

Faculty -Commerce
Subject -Business Organisation
Class -2nd Semester
Session-2023-27

व्यक्ति आय में वृद्धि करता है।"

स्थानीयकरण के कारण
(CAUSES OF LOCALISATION)

उद्योगों के स्थानीयकरण के अनेक कारण होते हैं, परन्तु प्राय: उद्योगों की स्थापना ऐसे ही स्थानों पर की जाती है जहाँ कि माल की उत्पादन लागत कम से कम आये तथा लाभ अधिक से अधिक हो। एक अर्थशास्त्री ने किसी भी उद्योग की स्थापना के लिए 9 एम (9 M) महत्वपूर्ण बतलाये :

(1) मुद्रा (Money), (2) माल (Material), (3) श्रम (Man), (4) बाजार (Market), (5) मशीनें (Machinery), (6) चालक शक्ति (Motive Power), (7) यातायात के साधन (Means of Transport), (8) प्रारम्भिक विकास का लाभ (Momentum of Early Start)।

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि किसी उद्योग के स्थानीयकरण करने वाले विभिन्न कारणों को हम अध्ययन की सुविधानुसार निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं :

(अ) भौगोलिक कारण (Geographical Causes)

(1) **स्थिति, जलवायु एवं अन्य सुविधाएँ**—अनेक प्राकृतिक दशाएँ औद्योगिक स्थानीयकरण को प्रोत्साहित अथवा हतोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए, जापान तथा इंग्लैण्ड की अनुकूल स्थिति एवं उत्तम जलवायु उद्योगों के स्थानीयकरण में सहायक सिद्ध हुई। लंकाशायर तथा महाराष्ट्र और गुजरात के पश्चिमी भागों में नम जलवायु ने सूती वस्त्र उद्योग को प्रोत्साहन दिया है। धरातल की उपयुक्त बनावट, समुद्री तट के निकट स्थित (बन्दरगाह की सुविधाओं के कारण) तथा पर्याप्त जल-पूर्ति की सुविधाएँ भी औद्योगिक स्थानीयकरण को आकर्षित करती है।

(2) **कच्चे पदार्थों की सुलभता**—अल्फ्रेड वेबर ने अपने सिद्धान्त में इस कारण का अत्यन्त सम्यक् विश्लेषण किया है। वेबर ने कच्चे पदार्थों का वर्गीकरण करके यह निष्कर्ष निकाला कि कुछ पदार्थ सब स्थानों पर प्रचुरता से उपलब्ध हो जाते हैं। इन्हें उसके वर्गीकरण में **सार्व प्राप्य पदार्थ** (Ubiquitous Materials) के नाम से सम्बोधित किया गया है। इनका स्थानीयकरण में कोई महत्व नहीं होता है। दूसरा वर्ग **स्थानीयकृत** कच्चे पदार्थों Localised Raw Materials) का है जिसके पुन: दो उप-वर्ग वेबर द्वारा किये गये—(अ) **शुद्ध कच्चे पदार्थ** (Pure Raw Materials), (ब) **सकल या समग्र पदार्थ** (Gross Materials)। **शुद्ध कच्चे पदार्थ** (Pure Materials) निर्माण की प्रक्रिया में **भार न खोने वाले** (non-weight losing) पदार्थ होते हैं जैसे ऊन, कपास, रेशम, ऊन, आदि। ये उद्योगों के स्थानीयकरण को अपनी ओर आवश्यक रूप से आकर्षित नहीं करते हैं, किन्तु **सकल या समग्र पदार्थ** (Gross Materials) '**भार खोने वाले**' (Weight Losing) पदार्थ होते हैं, जैसे खनिज लोहा, कोयला, गन्ना, आदि। ये पदार्थ स्थानीयकरण को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इसके लिए **वेबर** ने पदार्थ **निर्देशांक** (Material Index) का उपयोग किया है जिसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है।

(3) **शक्ति के साधन**—यान्त्रिक शक्ति के प्राय: तीन साधन ही महत्वपूर्ण होते हैं। ये हैं : कोयला, पेट्रोलियम तथा जल-विद्युत। इनमें पेट्रोलियम तथा जल-विद्युत की गतिशीलता (mobility) आधुनिक युग में बढ़ गई है। पेट्रोलियम पाइप लाइनों द्वारा तथा जल-विद्युत् संचार लाइनों के द्वारा उत्पादक स्थलों से उपभोग या औद्योगिक स्थलों तक अब सरलता से ले जायी जा सकती है। केवल कोयले पर आधारित कुछ उद्योग कोयला उत्पादन क्षेत्रों में या उनके निकट आज भी स्थानीयकृत किये जाते हैं, जैसे इस्पात उद्योग तथा अन्य धातु-शोधन उद्योग, किन्तु यदि सस्ते परिवहन के साधन उपलब्ध हों तो कोयला भी सुदूर औद्योगिक क्षेत्रों तक ले जाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जापान कोयला तथा खनिज लोहा दोनों **भार खोने वाले पदार्थ** (weight losing materials) विदेशों से आयात करके भी सस्ता इस्पात बनाने में माहिर है। अत: जापान में इस्पात उद्योग का स्थानीयकरण हमें 'औद्योगिक स्थानीयकरण की समस्या' पर नये सिरे से सोचने के लिए बाध्य करता है उल्लेखनीय है कि जापान अब विश्व का दूसरा बड़ा इस्पात उत्पादक देश है। अत: यह कहना अनुचित नहीं होगा कि आधुनिक युग में शक्ति के साधनों का स्थानीयकरण में किंचित महत्व तो अवश्य है, किन्तु उनका औद्योगिक केन्द्रीकरण पर कोई निर्धारक प्रभाव नहीं पड़ता है।